रविवार 3 अक्टूबर, 2021

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: **यूहन्ना** 7 : 24

"मुंह देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ॥"

उत्तरदायी अध्ययन: 2 कुरिन्थियों 10: 3-7

3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते।
4 (क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।)
5 सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।
6 और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा न मानने का पलटा लें।
7 तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो आंखों के साम्हने हैं, यदि किसी का अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह का हूं, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 1 शमूएल 16: 7 (*यहोवा देखता है*)

7 ... यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।

2. यिर्मयाह 17 : 5-8, 13, 14

5 यहोवा यों कहता है, श्रापित है वह पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा रखता है, और उसका सहारा लेता है, जिसका मन यहोवा से भटक जाता है।

6 वह निर्जल देश के अधमूए पेड़ के समान होगा और कभी भलाई न देखेगा। वह निर्जल और निर्जन तथा लोनछाई भूमि पर बसेगा।
7 धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो।
8 वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास फैली हो; जब घाम होगा तब उसको न लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिन्ता न होगी, क्योंकि वह तब भी फलता रहेगा।
13 हे यहोवा, हे इस्राएल के आधार, जितने तुझे छोड देते हैं वे सब लज्जित होंगे; जो तुझ से भटक जाते हैं उनके नाम भूमि ही पर लिखे जाएंगे, क्योंकि उन्होंने बहते जल के सोते यहोवा को त्याग दिया है।
14 हे यहोवा मुझे चंगा कर, तब मैं चंगा हो जाऊंगा; मुझे बचा, तब मैं बच जाऊंगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

3. मत्ती 8 : 5-10, 13

5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

4. यूहन्ना 12 : 37-46

37 और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया।
38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?
39 इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहा।
40 कि उस ने उन की आंखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि आंखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं।
41 यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं, कि उस ने उस की महिमा देखी; और उस ने उसके विषय में बातें कीं।

42 तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं।
43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी॥
44 यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है।
45 और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजने वाले को देखता है।
46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

5. मत्ती 23 : 1-3, 23, 24, 26, 27 (के लिये), 28

1 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा।
2 शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।
3 इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उन के से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।
23 हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय; तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।
24 हे अन्धे अगुवों, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो।
26 हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों॥
27 … तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हिड्डयों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।
28 इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो॥

6. 2 कुरिन्थियों 5: 6-8, 16-18 (*से 2nd*,)

6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।
16 सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे।
17 सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।
18 और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया, और मेल-मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है।

7. 2 कुरिन्थियों 6: 14-18

14 अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धामिर्कता और अधर्म का क्या मेल जोल? या
ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?
15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?
16 और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्दिर हैं; जैसा
परमेश्वर ने कहा है कि मैं उन में बसूंगा और उन में चला फिरा करूंगा; और मैं उन का परमेश्वर हूंगा, और वे
मेरे लोग होंगे।
17 इसलिये प्रभु कहता है, कि उन के बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो
मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।
18 और तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे: यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 472 : 24 (सब)-26, 30-3

ईश्वर और उसकी रचना में सभी वास्तविकता सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है। वह जो बनाता है वह अच्छा है, और जो कुछ भी बनाया जाता है वह उसी के द्वारा बनाया जाता है। ... हम क्रिश्चियन साइंस में सीखते हैं कि नश्वर मन या शरीर के सभी अंतर्ज्ञान भ्रम हैं, न तो वास्तविकता और न ही पहचान के बावजूद वास्तविक और समान प्रतीत होते हैं।

2. 243 : 32-6

भगवान जितना अच्छा है और सभी का स्रोत है, वह नैतिक या शारीरिक विकृति उत्पन्न नहीं करता है, लेकिन इस तरह की विकृति वास्तविक नहीं है, लेकिन भ्रम है, त्रुटि का मतिभ्रम। दिव्य विज्ञान इन भव्य तथ्यों का खुलासा करता है। किसी भी रूप में कभी भी डरने या न मानने की गलती से, उनके आधार पर यीशु ने जीवन का प्रदर्शन किया।

3. 250 : 6-13

नश्वर अस्तित्व एक सपना है; नश्वर अस्तित्व की कोई वास्तविक इकाई नहीं है, लेकिन सैथ "यह मैं है।" आत्मा वह अहंकार है जो कभी सपने नहीं देखता, लेकिन सभी चीजों को समझता है; जो कभी ग़लती नहीं करता, और जो हमेशा सचेत रहता है; जो कभी विश्वास नहीं करता, लेकिन जानता है; जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है। आध्यात्मिक मनुष्य इस अहंकार की समानता है। मनुष्य ईश्वर नहीं है, लेकिन प्रकाश की एक किरण की तरह, जो सूर्य से आती है, मनुष्य, ईश्वर का परिणाम, ईश्वर को दर्शाता है। मनुष्य ईश्वर नहीं है, लेकिन प्रकाश की एक किरण की तरह, जो सूर्य से आती है, मनुष्य, ईश्वर का परिणाम, ईश्वर को दर्शाता है।

4. 512 : 21-25

एक मन के अनंत तत्वों से सभी रूप, रंग, गुणवत्ता और मात्रा निकलती है, और ये मानसिक होते हैं, दोनों मुख्य रूप से और दूसरे रूप में। उनकी आध्यात्मिक प्रकृति केवल आध्यात्मिक इंद्रियों के माध्यम से विवेकी है।

5. 21 : 25-10

भौतिक के प्रति सहानुभूति होने के कारण, सांसारिक व्यक्ति त्रुटि के संकेत और आह्वान पर है और वह उधर की ओर आकर्षित होगा। वह पश्चिम की ओर सुख-यात्रा के लिए जाने वाले यात्री की तरह है। कंपनी आकर्षक है और आनंद रोमांचक है। छह दिनों तक सूर्य का अनुसरण करने के बाद, वह सातवें दिन पूर्व की ओर मुड़ जाता है, संतुष्ट होता है यदि वह केवल खुद को सही दिशा में बहने की कल्पना कर सकता है। समय-समय पर, अपने टेढ़े-मेढ़े रास्ते से शर्मिंदा होकर, वह किसी समझदार तीर्थयात्री का पासपोर्ट उधार लेता था, उसकी मदद से सोचता था कि वह सही रास्ता खोजे और उसका अनुसरण करे।

पाप और क्षमा, स्वार्थ और कामुकता की आशा के बीच एक पेंडुलम की तरह कंपन, निरंतर प्रतिगमन का कारण बनता है, — हमारी नैतिक प्रगति धीमी होगी। मसीह की माँग के प्रति जागते हुए, नश्वर दुख का अनुभव करते हैं। यह उनके कारण होता है, यहां तक कि डूबने वाले पुरुषों के रूप में, खुद को बचाने के लिए जोरदार प्रयास करना; और मसीह के अनमोल प्रेम के माध्यम से इन प्रयासों को सफलता मिली।

6. 298 : 8-24

जिसे भौतिक इन्द्रिय कहा जाता है, वह केवल वस्तुओं के नश्वर अस्थायी बोध की सूचना दे सकता है, जबकि आध्यात्मिक इन्द्रिय केवल सत्य की गवाही दे सकता है। भौतिक अर्थों के लिए, असत्य तब तक वास्तविक है जब तक कि इस भावना को ईसाई विज्ञान द्वारा ठीक नहीं किया जाता है।

भौतिक इंद्रियों के विपरीत आध्यात्मिक भावना में अंतर्ज्ञान, आशा, विश्वास, समझ, फल, वास्तविकता शामिल है। भौतिक भावना इस विश्वास को व्यक्त करती है कि मन पदार्थ में है। सुख और दर्द, आशा और भय, जीवन और मृत्यु के बीच बारी-बारी से यह मानवीय विश्वास कभी भी नश्वर या असत्य की सीमा से परे नहीं पहुंचता है। जब वास्तविक को प्राप्त कर लिया जाता है, जिसकी घोषणा विज्ञान द्वारा की जाती है, तो आनंद अब कांपता नहीं है, न ही आशा धोखा है। संख्या और नोट्स जैसे आध्यात्मिक विचार, सिद्धांत से शुरू होते हैं, और कोई भौतिकवादी विश्वास स्वीकार नहीं करते हैं। आध्यात्मिक विचार उनके दिव्य मूल, ईश्वर और होने की आध्यात्मिक भावना की ओर ले जाते हैं।

7. 359 : 29-21

एक ईसाई वैज्ञानिक और एक विरोधी दो कलाकारों की तरह हैं। एक कहता है: "मेरे पास आध्यात्मिक आदर्श हैं, अविनाशी और गौरवशाली। जब दूसरे उन्हें मेरी तरह देखते हैं, उनके सच्चे प्रकाश और सुंदरता में, - और जानते हैं कि ये आदर्श वास्तविक और शाश्वत हैं क्योंकि सत्य से खींचे गए हैं, - वे पाएंगे कि कुछ भी नहीं खोया है, और सब कुछ जीता है, एक सही अनुमान से सत्य है।"

दूसरा कलाकार जवाब देता है: "आपने मेरे अनुभव को गलत बताया। मेरे पास कोई मन-आदर्श नहीं हैं सिवाय उनके जो मानसिक और भौतिक दोनों हैं। यह सच है कि भौतिकता इन आदर्शों को अपूर्ण और विनाशकारी बना देती है; तौभी मैं तुम्हारे बदले में अपनी जगह नहीं लूंगा, क्योंकि मेरा मुझे ऐसा व्यक्तिगत सुख देता है, और वे इतने आश्चर्यजनक रूप से पारलौकिक नहीं हैं। उन्हें कम आत्म-त्याग की आवश्यकता होती है, और आत्मा को दृष्टि से दूर रखते हैं। इसके अलावा, मुझे अपने पुराने सिद्धांतों या मानवीय विचारों को खोने का कोई विचार नहीं है।"

प्रिय पाठक, आपके लिए कौन सा मन-चित्र या बाहरी विचार वास्तविक होगा, - भौतिक या आध्यात्मिक? आप दोनों नहीं हो सकते। आप अपना आदर्श सामने ला रहे हैं। यह आदर्श या तो लौकिक है या शाश्वत। या तो आत्मा या पदार्थ आपका आदर्श है। यदि आप दो मॉडल रखने की कोशिश करते हैं, तो आपके पास व्यावहारिक रूप से कोई नहीं है। एक घड़ी में एक पेंडुलम की तरह, आपको पदार्थ की पसलियों से टकराते हुए और वास्तविक और असत्य के बीच झूलते हुए, आगे और पीछे फेंका जाएगा।

8. 227 : 21-10

क्रिश्चियन साइंस स्वतंत्रता और रोने के मानक को बढ़ाता है: "मेरे पीछे आओ! बीमारी, पाप, और मृत्यु के बंधन से बचो! ” यीशु ने रास्ता चिह्नित किया। दुनिया के नागरिक, "परमेश्वर के बच्चों की शानदार स्वतंत्रता" स्वीकार करें और मुक्त रहें! यह तुम्हारा दिव्य अधिकार है। भौतिक बोध का भ्रम, ईश्वरीय विधान नहीं, आपको बाध्य करता है, आपके मुक्त अंगों को उलझाता है, आपकी क्षमताओं को अपंग करता है, आपके शरीर को ऊर्जावान करता है, और आपके होने के टैबलेट को ख़राब कर देता है।

यदि परमेश्वर ने मनुष्य पर शासन करने के लिए भौतिक नियमों की स्थापना की होती, जिसकी अवज्ञा करने से मनुष्य बीमार हो जाता, तो यीशु ने उन नियमों की अवहेलना नहीं की होती, जो उनके सीधे विरोध में और सभी भौतिक परिस्थितियों की अवहेलना करते हुए चंगाई करते।

बीमारी का संचरण या नश्वर मन की कुछ विशिष्टताओं का संचरण असंभव होगा यदि इस महान तथ्य को सीखा जाता है, अर्थात्, कुछ भी असंगत नहीं हो सकता है, क्योंकि जीवन ईश्वर है। सिद्धांतों को पिन करने के लिए नश्वर विश्वास के लिए आनुवंशिकता एक विपुल विषय है; परन्तु यदि हम यह जान लें कि अधिकार के सिवा कुछ भी वास्तविक नहीं है, तो हमारे पास कोई खतरनाक विरासत नहीं होगी, और शारीरिक बीमारियां गायब हो जाएंगी।

9. 403 : 14-20

आप स्थिति को आज्ञा देते हैं यदि आप समझते हैं कि नश्वर अस्तित्व आत्म-धोखे की स्थिति है न कि सत्य होने की। नश्वर मन लगातार नश्वर शरीर पर गलत विचारों के परिणाम उत्पन्न कर रहा है; और यह तब तक करना जारी रखेगा, जब तक कि नश्वर त्रुटि सत्य द्वारा अपनी काल्पनिक शक्तियों से वंचित न हो, जो नश्वर भ्रम के गॉसमेर वेब को मिटा देता है।

10. 208 : 20-24

आइए हम वास्तविक और शाश्वत के बारे में जानें, और आत्मा के राज्य, स्वर्ग के राज्य की तैयारी करें - सार्वभौमिक सद्भाव का शासन और शासन, जिसे खोया नहीं जा सकता और न ही हमेशा के लिए अनदेखा किया जा सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6